6

कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक 'हमारा अद्भुत संसार' द्वारा बच्चों में परिवेश के प्रति संवेदनशीलता का विकास

अभय कुमार*
कमलेश कुमार यादव**

'हमारा अद्भुत संसार' नामक पाठ्यपुस्तक कक्षा 3 के बच्चों के लिए तैयार की गई है, जिसका प्रमुख उद्देश्य बच्चों में पर्यावरणीय जागरूकता, पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों को विकसित करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) 2023 के निर्देशों के अनुरूप यह पुस्तक पर्यावरणीय संतुलन, जल संरक्षण, जैव विविधता और सामुदायिक सहयोग पर जोर देती है। पाठ्यपुस्तक में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया गया है। इसके अलावा, पोषण, स्वच्छता और स्वास्थ्य पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। यह पुस्तक बच्चों की जिज्ञासा, आलोचनात्मक सोच और नैतिक मूल्यों के विकास में सहायक है, जिससे वे एक संवेदनशील और जागरूक समाज का हिस्सा बन सकें। यह पाठ्यपुस्तक चार इकाइयों और 12 अध्यायों में विभाजित है, जिसमें परिवार, त्योहार, पर्यावरण, स्वास्थ्य, स्वच्छता और सतत विकास जैसे विषय शामिल हैं। पाठ्यपुस्तक में व्यवहारवादी, रचनावादी और अनुभवात्मक अधिगम शिक्षण पद्धतियों का मिश्रण है, जो बच्चों की रचनात्मकता, संवेदनशीलता और समग्र विकास को प्रोत्साहित करती हैं।

बच्चों के शुरुआती जीवन में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का प्रसार नहीं, बल्कि उनके सामाजिक और भावनात्मक विकास को भी प्रोत्साहित करना है। इसी दृष्टिकोण से तैयार की गई पाठ्यपुस्तक 'हमारा अद्भुत संसार' एक अभिनव अधिगम-शैक्षिक सामग्री है, जो बच्चों को उनके पारिवारिक, सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश से जोड़ने का प्रयास करती है। शिक्षा में पाठ्यपुस्तकें न केवल बच्चों के लिए ज्ञानवर्धक होती हैं, बल्कि अभिभावकों और शिक्षकों के लिए भी एक महत्वपूर्ण संसाधन साबित होती हैं। यह शिक्षकों को बच्चों की समग्र शिक्षा में सक्रिय भूमिका निभाने में सहायता

**सहायक आचार्य*, सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016
***अकादमिक सलाहकार,* सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016

करती हैं और अभिभाविकों को उनके बच्चों के विकास की प्रक्रिया में सम्मिलित करती हैं।

किसी भी अच्छी पुस्तक का उद्देश्य बच्चों को उनके पारिवारिक और सामुदायिक जीवन की गहरी समझ प्रदान करना है, जिससे वे सहयोग, सामूहिकता और संवेदनशीलता के मूल्यों को आत्मसात कर सकें। बच्चों में उनके पर्यावरण के प्रति जागरूकता और पारिस्थितिक संतुलन की भूमिका को समझाने का प्रयास भी पाठ्यपुस्तक का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

'हमारा अद्भुत संसार' (हमारे आस-पास की दुनिया) पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा मई 2024 में प्रकाशित हुई है। यह पाठ्यपुस्तक कक्षा 3 के बच्चों के लिए है। इस बार कक्षा 3 के पाठ्यक्रम में हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, गणित, पर्यावरण अध्ययन के अलावा कला, शारीरिक शिक्षा और आरोग्य को भी शामिल किया गया है। एक उच्च स्तरीय निर्माण समिति द्वारा निर्मित यह पाठ्यपुस्तक 4 इकाई और 12 अध्यायों में विभाजित है। इकाई का आरंभ 'शिक्षकों के लिए' शीर्षक से हुआ है जिसका उद्देश्य शिक्षकों को पाठ्यचर्या के अनुरूप अधिगम आधारित पैडागॉजी (शिक्षणशास्त्र) का बेहतर उपयोग करने के लिए प्रेरित करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 के अध्याय 4 'विद्यालयों में पाठ्यक्रम और शिक्षणशास्त्र— अधिगम समग्र, एकीकृत, आनंददायी और रुचिकर होना चाहिए' के अंतर्गत पर्यावरण संबंधी जागरूकता जिसमें जल व अन्य संसाधन संरक्षण भी सम्मिलित हैं, पर्यावरण शिक्षा (उप-अध्याय 4.24), भारत के ज्ञान के संदर्भ में पर्यावरण (उप-अध्याय 4.27), सामाजिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा के संदर्भ में पर्यावरण (उप-अध्याय 4.28) के प्रति सम्मान पर भी विशेष ध्यान दिया गया है।'

पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त उपागम

पाठ्यपुस्तक 'हमारा अद्भुत संसार' बच्चों के समग्र विकास और उनकी परिवेशीय समझ को बढ़ाने के लिए एक प्रभावी अधिगम शैक्षिक साधन है। इसका उपागम व्यवहारवादी, रचनावादी और अनुभवात्मक शिक्षण पद्धतियों का संतुलित मिश्रण प्रस्तुत करता है। व्यवहारवादी उपागम को ध्यान में रखते हुए बच्चों के अभ्यास और व्यवहार को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से क्रियात्मक गतिविधियों, जैसे— चित्र बनाना, पहेलियाँ हल करना और सामूहिक चर्चा को अपनाया गया है। इससे बच्चे शिक्षा में अनुशासन और दोहराव के माध्यम से स्थायी ज्ञान अर्जित करते हैं। दूसरी ओर, रचनावादी उपागम बच्चों को उनके जीवन अनुभवों और सामाजिक परिवेश से जोड़ता है। मेलों, त्योहारों और सामुदायिक गतिविधियों के उदाहरण बच्चों में सहयोग, सामूहिकता और विविधता के प्रति सम्मान का भाव विकसित करते हैं।

अनुभवात्मक उपागम पाठ्यपुस्तक का सबसे सशक्त पहलू है। यह बच्चों को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी के माध्यम से व्यावहारिक ज्ञान और संवेदनशीलता प्रदान करता है। पर्यावरणीय ज्ञान को बढ़ाने के लिए पौधों, जानवरों और प्रकृति के विभिन्न घटकों के महत्व को सरल और रोचक तरीके से समझाया गया है। साथ ही, पर्यावरण की

सुरक्षा और प्रकृति के प्रति सम्मान का भाव विकसित करने का प्रयास किया गया है। पाठ्यपुस्तक में दिए गए शिक्षण साधन न केवल बच्चों को पारिवारिक और सामुदायिक जीवन के साथ जोड़ते हैं, बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार और जागरूक नागरिक बनने के लिए प्रेरित भी करते हैं। व्यवहारवादी दृष्टिकोण में आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच को अधिक बढ़ावा देने की आवश्यकता होती है। कुल मिलाकर, यह पाठ्यपुस्तक बच्चों के समग्र विकास के उद्देश्य को सफलतापूर्वक पूरा करती है और उन्हें एक समृद्ध, संवेदनशील और समन्वयपूर्ण समाज का हिस्सा बनने के लिए तैयार करती है। इस पाठ्यपुस्तक के तीन व्यापक घटक हैं। पहला घटक, अपेक्षित अधिगम के लिए सामग्री और कौशल का चयन है। दूसरा घटक, विषयवस्तु को बच्चों के लिए परस्पर संवादात्मक रूप में प्रस्तुत करना है। यह शिक्षकों को अवधारणाओं और कौशलों को क्रियान्वित करने में सहायता करता है। पाठ की प्रस्तुति में विभिन्न आयु-अनुरूप शैक्षणिक दृष्टिकोण, जैसे— खेल-आधारित, थीम-आधारित, खिलौने-आधारित और जाँच-आधारित तरीके शामिल हैं, जिससे शिक्षण अधिगम बाल-केंद्रित और आनंददायक बन सके। तीसरा घटक है, मूल्यांकन प्रक्रियाओं का चयन और बच्चों के सीखने की प्रगति पर लगातार दृष्टि रखना। हम सभी जानते हैं कि बच्चे चित्रों को पढ़ने, चर्चा करने, प्रयोग करने, पहेलियों को सुलझाने, अनुभव साझा करने तथा चित्र बनाने और लिखने के माध्यम से विचारों को व्यक्त करने से भी सीखते हैं। मूल्यांकन के बोझ को कम करने के लिए उपरोक्त गतिविधियों के माध्यम से अधिगम का मूल्यांकन करने के लिए निर्देश दिए गए हैं। प्रभावी और सही मूल्यांकन के लिए प्रत्येक विषय में सीखने के प्रतिफलों और दक्षताओं की कक्षावार पहचान की गई है और शिक्षकों को तदनुसार सीखने का आकलन करने से संबंधित सुझाव दिए गए हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ. एस.ई.) 2023 में भी इस बात पर जोर दिया गया है कि "बाल विकास तीन अलग-अलग प्रक्रियाओं, अर्थात जैविक, संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक प्रक्रियाओं की परस्पर क्रिया से प्रभावित होता है। ये प्रक्रियाएँ एक-दूसरे के साथ जटिल रूप से जुड़ी हुई हैं। इनमें से प्रत्येक प्रक्रिया बच्चे के शारीरिक, संज्ञानात्मक, भाषायी, सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास में भूमिका निभाती है" उपरोक्त इन्हीं दिशा-निर्देशों के अनुरूप पर्यावरण अध्ययन की यह पुस्तक 'हमारा अद्भुत संसार' (हमारे आस-पास की दुनिया) तैयार की गई है।

पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु

पाठ्यपुस्तक में चार इकाई हैं

- हमारा परिवार और समुदाय
- जीवन आस-पास
- प्रकृति के उपहार
- आस-पास है क्या-क्या

प्रत्येक इकाई में 3-3 अध्याय हैं

पाठ्यपुस्तक में क्रमवार अध्याय इस प्रकार है— 'मेरा परिवार और मित्र', 'मेले में हम', 'त्योहार मनाएँ एक साथ', 'कुछ खोज पेड़-पौधों की', 'पेड़-पौधे और पशु-पक्षी हैं साथ', 'निर्भरता एक-दूसरे पर',

'पानी है अनमोल', 'हमारा भोजन', 'स्वस्थ रहो, प्रसन्न रहो', 'वस्तुओं की दुनिया', 'कैसे बनीं ये वस्तुएँ?', और 'क्या और कैसे करें इसका?' इन अध्यायों में परिवार, समाज, स्वास्थ्य, सतत विकास, स्वच्छता, पोषण, पर्यावरण तथा कचरा प्रबंधन जैसे पहलुओं को समेकित किया गया है जो बच्चों के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के अवयवों के साथ सरेखित होती है। जिससे अध्यायों में एक वैज्ञानिक तारतम्यता देखने को मिलती है।

पुस्तक की भाषा शैली सरल, स्पष्ट और व्याख्यात्मक है, जो कक्षा 3 के बच्चों के लिए उपयुक्त है। इसमें संवादात्मक और विवरणात्मक तत्वों का मिश्रण है, जिससे बच्चों की जिज्ञासा बढ़ती है। पाठ्यपुस्तक में विभिन्न अध्ययन शिक्षण सामग्रियों, जैसे— चित्र, प्रश्न, चर्चाएँ, गतिविधियों और उदाहरणों के माध्यम से विषयवस्तु को रोचक और सुलभ रूप में प्रस्तुत किया गया है।

पंचकोश-विकास की अवधारणा पर आधारित

पुस्तक की पाठ्यसामग्री भारतीय दर्शन के पंचकोश विकास की अवधारणा के साथ भी जुड़ी है। पुस्तक में वर्णित विभिन्न विषय एवं गतिविधियाँ विभिन्न पंचकोशों के विकास को ध्यान में रखकर संयोजित की गई हैं, जैसे— बच्चों के रोज़मर्रा के जीवन और उनके भौतिक संघर्षों के माध्यम से अन्नमय कोश को उजागर किया गया है। बच्चों की ऊर्जा और सक्रियता प्राणमय कोश से संबंधित है। यह उनके शारीरिक कार्यों और जीवंतता को प्रदर्शित करती है। इसकी प्रतिपूर्ति के रूप में पाठ्यपुस्तक बच्चों को विभिन्न क्रियाकलापों एवं गतिविधियों के माध्यम से उर्जावान बनाए रखती है। बच्चों की मानसिक स्थिति, उनकी सोच, भावनाएँ व उनके मनोवैज्ञानिक पहलुओं, अंतर्द्वंद्व, उनके भावनात्मक उतार-चढ़ाव और उनके निर्णय लेने की प्रक्रिया मनोमय कोश का हिस्सा है। बच्चों के विवेक और बुद्धि तथा विभिन्न मानसिक परिस्थितियों और विचारों की जटिलता को 'वर्ग पहेली', 'चर्चा कीजिए', 'आइए, मंथन करें!', 'लिखिए', 'चित्र बनाइए', 'क्या और कैसे करें इसका' के माध्यम से दर्शाया गया है जो बच्चों को विचारात्मक दृष्टिकोण, आलोचनात्मक सोच को सबल बनाती है जो विज्ञानमय कोश से संबंधित है। आनंदमय कोश उस आंतरिक शांति और पूर्णता की ओर संकेत करता है जो बच्चों के आध्यात्मिक विकास और आत्म-साक्षात्कार में प्रतिबिंबित होता है। पाठ की भाषा, रंगीन चित्र, विभिन्न रेखांकन और गतिविधियाँ, चर्चाएँ, प्रश्न एवं अभिनय के माध्यम से बच्चे आनंदमय कोश की ओर उन्मुख हो सकें, इसका पूरा ख्याल रखा गया है।

संवेदनशीलता के विकास हेतु क्रियाकलाप

पाठ्यपुस्तक समेकित रूप से बच्चों को समग्रता में प्रशिक्षित करने और उन्हें पाठ तथा उससे जुड़े ज्ञान के प्रति संवेदनशील बनाने पर जोर देती है। इस प्रक्रिया के परिमार्जन के लिए इसे विभिन्न उपागमों में विभाजित कर समावेशी बनाने पर बल दिया गया है। पाठ्यपुस्तक प्रमुखता से मानव के पंचकोशीय विकास, जीवन-दर्शन, मित्र, परिवार, समुदाय और जीवन की महत्ता, पर्यावरणीय संवेदनशीलता और सामाजिक सातत्य को दर्शाती है।

मित्र, परिवार, समुदाय और जीवन की महत्ता पर चर्चा द्वारा

'मेरा परिवार और मित्र' अध्याय में परिवार और मित्रों के बीच के संबंधों, आपसी सहयोग और सामुदायिक जीवन की महत्ता को समझाया गया है। बच्चों को अपने परिवार और मित्रों के साथ घनिष्ठता बढ़ाने, आपसी सम्मान और समानुभूति जैसे गुणों के विकास के लिए प्रेरित किया गया है। यह पाठ परिवार की संरचनाओं और उनके योगदान को रेखांकित करता है, जिसमें परिवार के सदस्यों के बीच परंपराओं और संबंधों के महत्व को भी दर्शाया गया है। उदाहरण के तौर पर, 'मेले में घुसते ही उन्होंने खेल, खिलौनों, मिठाई और तरह-तरह के मजेदार चीजों के स्टॉल देखे। बच्चे खुशी से झूम रहे थे। वे खिलौने वाले स्टॉल पर गए। वहाँ उन्होंने लट्टू, कठपुतली, फिरकी और गुड़िया खरीदी।' 'चर्चा कीजिए' के अंतर्गत 'जब आप कहीं बाहर घूमने जाते हैं, तो क्या-क्या तैयारी करते हैं?' जैसे प्रश्नों से बच्चों को अपनी सोच और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने का अवसर मिलता है। बच्चों को मेले के दृश्य का अभिनय (रोल-प्ले) करने और चित्र बनाने जैसी गतिविधियों के माध्यम से अपनी रचनात्मकता को व्यक्त करने का अवसर दिया गया है। यह कला-आधारित शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिससे बच्चों की सृजनात्मक सोच और अभिव्यक्ति कौशल विकसित होगा।

पर्यावरणीय जागरूकता, पारिस्थितिक संतुलन और प्राकृतिक संवेदनशीलता द्वारा

नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023, समग्र विकास, पर्यावरणीय जागरूकता और बच्चों की जिज्ञासा को प्रोत्साहित करती है। 'कुछ खोज पेड़-पौधों की', अध्याय में प्राकृतिक जगत के प्रति बच्चों की रुचि और समझ को बढ़ाने के लिए पेड़-पौधों के विभिन्न पहलुओं को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। बच्चों से पेड़ों, झाड़ियों, जड़ी-बूटियों और घासों की पहचान और अध्ययन करने को कहा गया है, जैसे— "यहाँ कुछ चित्र दिए गए हैं जिसमें आप देखेंगे कि पशु और पक्षी और पेड़-पौधे साथ दिख रहे हैं। आप इन चित्रों में किन-किन पशु-पक्षियों को पहचान पा रहे हैं? आपने इनमें से किन्हें पहले देखा है? इनमें-से कौन-से जीव जमीन के नीचे रहते हैं?" यह गतिविधि-आधारित अधिगम प्रक्रिया बच्चों में जिज्ञासा, पौधों के प्रति देखभाल और उनके पोषण की आवश्यकता पर बल देती है। 'निर्भरता एक-दूसरे पर', अध्याय में मानव, पौधों तथा पशुओं के बीच परस्पर निर्भरता पर चर्चा की गई है। उदाहरणों के माध्यम से यह दिखाया गया है कि "पशु-पक्षी और पेड़-पौधे भोजन एवं आवास के लिए एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं। पशु-पक्षी बीजों को एक जगह से दूसरी जगह बिखेरने में पेड़-पौधों की सहायता करते हैं। वे अपनी विष्ठा से भूमि को उपजाऊ बनाते हैं। इससे पौधों को दूर-दूर तक यहाँ-वहाँ उगने और पनपने में सहायता मिलती है। हम भी भोजन, आवास, वस्त्र और साथ पाने के लिए पशु-पक्षियों और पौधों पर निर्भर रहते हैं।" बच्चों को अपने आस-पास के पेड़-पौधों तथा जानवरों पर ध्यान देने और उनकी गतिविधियों का अवलोकन करने के लिए प्रेरित किया गया है। 'पानी है अनमोल' अध्याय में जल संरक्षण के महत्व पर जोर दिया गया है। बच्चों को जल की

कमी के बारे में सजग करना तथा जल का सही तरीके से उपयोग करने पर चर्चा की है जो बच्चों को उनके स्थानीय परिवेश में जल संरक्षण के उपायों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। 'क्या और कैसे करें इसका?' में बच्चों को कचरा प्रबंधन के महत्व और उसके सही निस्तारण के बारे में बताया गया है तथा कचरा कम करने, पुन: उपयोग करने और पुनर्चक्रण के विभिन्न तरीकों से परिचित कराया गया है। इससे वे न केवल पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझते हैं। बल्कि स्वच्छता के प्रति जागरूक भी होते हैं।

सांस्कृतिक जीवन, पोषण और स्वास्थ्य पर चर्चा द्वारा

'त्योहार मनाएँ एक साथ' अध्याय में बच्चों को सामूहिक रूप से सीखने, सांस्कृतिक विविधता को अपनाने और साझा करने की प्रेरणा दी गई है। इसमें त्योहारों के सांस्कृतिक महत्व को उजागर करने का प्रयास किया गया है, जो बच्चों में सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान और सहिष्णुता को बढ़ावा देता है। 'हमारा भोजन' अध्याय में स्वास्थ्य और सटीक पोषण के महत्व को संप्रेषित किया गया है, जो आज के दौर का सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है। संतुलित आहार पर आधारित यह अध्याय हमें बताता है कि विभिन्न खाद्य पदार्थ हमारी सेहत के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं। साथ ही, भोजन की बर्बादी को रोकने के लिए विशेष जोर दिया गया है। अध्याय में, 'हम यह कैसे बता सकते हैं कि भोजन संतुलित है या असंतुलित?' जैसे प्रश्नों के माध्यम से बच्चों में आलोचनात्मक सोच का विकास होता है जो कि एन.सी.एफ.एस.ई. 2023 में नैतिक मूल्यों की शिक्षा के अनुरूप है। यह अध्याय न केवल पोषण के सिद्धांतों को सिखाता है, बल्कि बच्चों में समस्या-समाधान की क्षमता और संतुलित आहार को पहचानने की योग्यता को भी विकसित करता है। 'स्वस्थ रहो, प्रसन्न रहो' अध्याय में सामाजिक, नैतिक और शारीरिक स्वास्थ्य के विकास पर जोर दिया गया है। यह अध्याय बच्चों को बेहतर शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक प्रसन्नता से जुड़े अभ्यास और आदतों को विकसित करने में सहायक है, जो समग्र व्यक्तित्व के विकास का हिस्सा है। 'वस्तुओं की दुनिया' में वस्तुओं की उत्पत्ति, उनके स्रोत और उनके निर्माण के बारे में जानने का अवसर प्रदान करता है। इसमें विभिन्न सामग्रियों का अध्ययन, उनके गुणों की पहचान और उनके व्यवहार को समझने के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ दी गई हैं, जैसे — 'पुराने अखबार, कैलेंडर, बोतलों, डिब्बों आदि से खिलौने और सजावट का सामान बनाया जा सकता है।' जो बच्चों के अनुभव-आधारित शिक्षण को प्रोत्साहित करती हैं। यह बच्चों के समग्र विकास, वैज्ञानिक सोच और पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ावा देने में सहायक है।

विभिन्न कौशल के विकास द्वारा

इकाइयों के प्रत्येक पाठ में सिखाई जा रही अवधारणाओं और कौशलों के लिए परस्पर संवादपरक बातचीत या कहानी-आधारित कथात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। उदाहरण के लिए, इकाई 2 की विषयवस्तु 'कुछ खोज पेड़-पौधों की', बच्चों के बीच के संवाद को प्रस्तुत करती है, जो एक बगीचे में खोज-बीन

कर रहे हैं। यहाँ वे विभिन्न प्रकार के पौधों तथा उनके विभिन्न भागों की खोज कर रहे हैं और एक संतुलित व सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने के लिए पौधों की देखभाल करने की आवश्यकता के बारे में बता रहे हैं। प्रत्येक पाठ में दी गई विषय-सामग्री बच्चों के अनुरूप है और अधिगम प्रकिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करती है। स्व-व्याख्यात्मक चित्रण का उद्देश्य बच्चों में अवलोकन और आलोचनात्मक चिंतन के कौशलों को विकसित करना है। यह प्रयास किया गया है कि पुस्तक में भाषा और अवधारणा का स्तर आयु के अनुरूप हो तथा हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों को भी दर्शाता हो। प्रत्येक इकाई के आरंभ में प्रत्येक पाठ के लिए एक अवधारणा योजना दी गई है जो वांछित दक्षताओं और अपेक्षित अधिगम प्रतिफलों को लक्षित करने में सहायता करेगी।

आकलन की विधियाँ

पाठ्यपुस्तक 'हमारा अद्भुत संसार' बच्चों के समग्र विकास का मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न आकलन विधियों को अपनाती है। इन विधियों का उद्देश्य बच्चों की रचनात्मकता, संवाद कौशल, सामाजिक समझ और विषयगत ज्ञान का परीक्षण करना है। पुस्तक मुख्य रूप से गतिविधि आधारित, चर्चा आधारित, लेखन आधारित, रचनात्मकता और अनुभवात्मक आकलन पर केंद्रित है। गतिविधि आधारित आकलन में बच्चों को उनके परिवार और मित्रों के चित्र बनवाने, पेड़-पौधों से गिरी पत्तियों और फूलों से रंगोली बनाने तथा वर्ग पहेली हल करने जैसी गतिविधियाँ दी गई हैं। ये गतिविधियाँ न केवल बच्चों की रचनात्मकता और सहभागिता को बढ़ावा देती हैं, बल्कि उनकी एकाग्रता और अवलोकन क्षमता का भी परीक्षण करती हैं। चर्चा आधारित विधियों के तहत बच्चों से परिवार के सदस्यों के कार्यों, त्योहारों के अनुभवों और सामुदायिक गतिविधियों पर संवाद करवाया गया है। इससे बच्चों के आत्मविश्वास, तर्कशक्ति और विचारों को व्यक्त करने की क्षमता का आकलन होता है।

लेखन आधारित आकलन बच्चों के लेखन कौशल और विषयगत समझ को परखने के लिए प्रभावी है। बच्चों से उनके परिवार के सदस्यों और कार्यों की सूची तैयार करवाना, त्योहारों या विशेष पलों के बारे में लिखवाना और पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखवाना, इनकी विश्लेषणात्मक क्षमता और भाषा कौशल को बढ़ावा देता है। रचनात्मकता और कला आधारित आकलन में बच्चों को हस्तनिर्मित वस्तुएँ बनाने और पारिवारिक गतिविधियों व त्योहारों से संबंधित चित्रकारी करने के लिए प्रेरित किया गया है, जिससे उनकी सृजनात्मकता और कलात्मक अभिव्यक्ति का विकास होता है। अनुभव आधारित आकलन में शैक्षिक भ्रमण और आगंतुकों से संवाद शामिल है। बगीचों, मेलों और पुलिस स्टेशन जैसे स्थलों का भ्रमण बच्चों की जिज्ञासा, पर्यवेक्षण शक्ति और सामाजिक समझ को बढ़ाने में सहायक है। कुल मिलाकर, यह आकलन विधियाँ बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाती हैं, जिससे वे न केवल बेहतर ज्ञान अर्जित कर सकें, बल्कि अपने सामाजिक और रचनात्मक कौशल को भी सुदृढ़ कर सकें। यह विधियाँ

बच्चों के समग्र विकास और एक जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में प्रभावी योगदान करती हैं।

अधिगम के प्रतिफल

अधिगम परिणामों की बात की जाए तो यह पाठ्यपुस्तक परिवार की संरचना, प्रकृति और जीवों के प्रति संवेदनशीलता, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, सामाजिक मूल्य, पारस्परिक सहयोग, रचनात्मकता तथा खेल जैसे जिज्ञासायुक्त विषयों को सरेखित करती हैं। साथ ही, अनुप्रयोग के स्तर पर जल और भोजन की महत्ता, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के पहुलओं का उपयोग कर बच्चों को समकालीन परिस्थितियों के अनुरूप तैयार करने में मदद करती हैं। जिसके परिणामस्वरूप, बच्चे अपने समाज, परिवार, पर्यावरण, स्वास्थ्य और संवेदनशीलता को वैज्ञानिक सोच के अनुरूप बना सकेंगे।

निष्कर्ष

पाठ्यपुस्तक 'हमारा अद्भुत संसार' (हमारे आस-पास की दुनिया) में परिवार, समाज, पर्यावरण और नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षण सामग्री को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में बच्चों की जिज्ञासा, रचनात्मकता और भाषा कौशल को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियों को शामिल कर अनुभवात्मक और सहभागिता आधारित शिक्षा, पारंपरिक ज्ञान, पर्यावरणीय जागरूकता, सृजनात्मकता और जीवन कौशल पर विशेष ध्यान दिया गया है। बच्चों को नैतिक मूल्यों को सिखाने के साथ-साथ, यह पुस्तक सामाजिक जिम्मेदारी और सहयोग की भावना को बढ़ावा देती है, जिससे बच्चे जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बन सकें। पुस्तक का उद्देश्य शिक्षा को मनोरंजक तरीके से प्रस्तुत करना है, ताकि बच्चे सीखने में आनंद लें और समाज में अपना योगदान समझ सकें।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2023. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023*. पृ.सं. 63. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2024. मेले में हम. *हमारा अद्भुत संसार (हमारे आस-पास की दुनिया)*. पृ.सं. 21, 26–27. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2024. पेड़-पौधे और पशु-पक्षी हैं साथ. *हमारा अद्भुत संसार (हमारे आस-पास की दुनिया)*. पृ.सं. 63. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2024. निर्भरता एक-दूसरे पर. *हमारा अद्भुत संसार (हमारे आस-पास की दुनिया)*. पृ.सं. 77. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2024. हमारा भोजन. *हमारा अद्भुत संसार (हमारे आस-पास की दुनिया)*. पृ.सं. 108. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2024. क्या और कैसे करें इसका? *हमारा अद्भुत संसार (हमारे आस-पास की दुनिया)*. पृ.सं. 155. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.